एक मूल्यवान डायरी

राजाराम भादू

रेखा चमोली को सबसे पहले हम एक संवेदनशील कवि के रूप में जानते हैं। उनकी कविताओं में सहजता के साथ अभिनव भाव-अभिव्यक्तियां हैं। फिर उनकी डायरी के अंश कुछ पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ने को मिले। और तब उनके परिचय पर ध्यान दिया तो रेखा और उनकी डायरी की महत्ता और भी बढ़ गई। रेखा एक सरकारी स्कूल की शिक्षक थीं अर्थात शैक्षिक-विमर्श के लिहाज से मुख्यधारा शिक्षा से जुड़ी थीं। सरकारी स्कूलों के समानान्तर स्वयंसेवी अथवा निजी शिक्षा संस्थानों के शिक्षकों के लिए शैक्षिक नवाचार और प्रयोग होते रहे हैं। हालांकि उनका अपना महत्व है लेकिन इनकी असल उपादेयता तो वृहद स्तर पर अनुप्रयोग में है। हमारे यहां बीसवीं सदी की दो अंतिम शताब्दियां शैक्षिक नवाचारों और विमर्श की दृष्टि से काफी उन्नत रही हैं। उसके बाद मुख्यधारा शिक्षा में इनके वृहद अनुप्रयोग को लेकर शासन व्यवस्था की ओर से भी व्यापक समर्थनकारी योजनाएं क्रियान्वित हुई हैं। बल्कि प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीनकरण के लिए शिक्षा का अधिकार अधिनियम ही लागू कर दिया गया। इसके बावजूद गुणवत्ता के लिहाज से हमारे मुख्यधारा स्कूल पिछड़ते गए हैं और उसी अनुपात में सरकारी शिक्षकों की भूमिका प्रश्नों के घेरे में आती गई है। ऐसी स्थिति में कोई शिक्षक स्व-प्रेरणा से अपने नियमित शिक्षण में नित नये प्रयोग और स्थापित नवाचारों को व्यवहृत ही नहीं कर रहा बल्कि इन्हें चिन्तन-मनन करते हुए दर्ज भी कर रहा है तो यह एक प्रेरक उदाहरण से कम और क्या हो सकता है। इस प्रसंग में अजीम प्रेमजी ने रेखा चमोली की अनुभव डायरी को 'मेरी स्कूल डायरी' शीर्षक से प्रकाशित करके उल्लेखनीय कार्य किया है।

शिक्षा के संदर्भ में उल्लेखनीय प्रश्न यह है कि विश्वभर में शिक्षाशास्त्रीय रचनाएं बहुत कम हैं - विशेषकर शिक्षण विधियों पर। लेकिन इस प्रसंग में जिन रचनाआं को शिक्षा जगत में क्लासिक का दर्जा हासिल है वे कोई अकादमिक रचनाएं नहीं हैं। बल्कि शिक्षण करते हुए लिखी गई अनुभव डायरियां हैं। इस मामले में मुझे लगता है शिक्षकों की स्थिति भी सबआल्टर्न जैसी ही है। जहां लम्बे समय तक मौन की संस्कृति हावी रही है। दुनिया भर में स्त्रियों, आदिवासियों, दलितों और वंचित समुदायों ने अपनी अभिव्यक्ति आत्मकथा से शुरू की है। बाद में वे बेहतर साहित्यिक कृतियों के सृजन की सामर्थ्य भी अर्जित करते गये हैं। शिक्षा में भी हमें बदलाव के आरंभिक स्तर पर अनुभव डायरियां ही मिलती हैं, तदनन्तर अकादमिक शिक्षणशास्त्र विकसित होता गया है। शिक्षक यदि ऐसी अनुभव डायरियों से शुरुआत करते हैं तो जल्दी ही वे शिक्षण शास्त्रीय विमर्श के अन्य आयामों में भी भागीदारी करने लगेंगे।

यह किसी खास या साधन-संपन्न स्कूल की डायरी नहीं है वरन् यह एक ऐसे ठेठ भारतीय सरकारी प्राथमिक स्कूल की शिक्षक के शिक्षा-कर्म का वर्णन प्रस्तुत करती है, जिसका वास्ता ग्रामीण परिवेश में रहने वाले गरीब बच्चों की शुरुआती शिक्षा से है। इस स्कूल में शैक्षिक संसाधनों व पर्याप्त जगह का अभाव है। यहां पांच कक्षाओं में हर वर्ष तकरीबन पचास बच्चों को पांच महत्वपूर्ण विषय पढ़ाने के लिए सिर्फ दो महिला शिक्षक

हैं, जिनमें एक प्रधान अध्यापक का दायित्व भी संभाल रही हैं। इतना ही नहीं, शिक्षा की जड़ता व सामाजिक-आर्थिक और व्यवस्थागत समस्याएं अन्य सरकारी विद्यालय की तरह यहां भी मौजूद हैं।

इस पुस्तक के संपादक गुरुबचन सिंह के अनुसार, यह डायरी किसी शिक्षक की सफलता का वृत्तान्त ही नहीं है वरन् यह एक विचारशील शिक्षक की निर्मिति की यात्रा भी है। आदर्श की अतिरंजनाओं से कोसों दूर यह सामान्य सरकारी स्कूल व कक्षाओं की अभावग्रस्त परिस्थितियों व वातावरण में शिक्षक के अध्यापन कार्य का स्वाभाविक विवरण प्रस्तुत करती है। वे आगे कहते हैं, जाहिर है, अध्यापन कर्म की केन्द्रीय ऊर्जा शिक्षक ही होता है, जो बच्चों को वैसे ही गढ़ता है, जैसे लेखक किताब लिखता है। डायरी वृत्तान्त में हम देख पाते हैं कि वह कैसे बच्चों के अनुभवों का लगातार जायजा लेती हैं और इस काम के लिए बच्चों व शिक्षक के बीच घटने वाली संवाद प्रक्रियाओं का सूक्ष्म अवलोकन व विश्लेषण करती हैं। वे लिखते हैं, यह डायरी उदाहरण प्रस्तुत करती है कि शिक्षक और पचास बच्चों की शैक्षिक जुगलबन्दी कैसे कक्षा में पसरे हर तरह के सन्नाटे को तोड़ने की पहल कर सकती है।

रेखा चमोली ने इस पुस्तक की भूमिका में जो कहा है, वह भी मुख्यतः शिक्षक साथियों को ही संबोधित है लेकिन उसके कुछ अंश उनके अनुभवों को समझने वाले व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण हैं। शुरू में वे लिखती हैं, शिक्षण का पेशा काफी चुनौती भरा है। इस पेशे में यदि आनन्द की अनुभूति को कायम रखना है तो बहुत जरूरी है कि शिक्षक अपने सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में खुद से निरन्तर सवाल-जवाब करें और अपने अनुभवों के आधार पर अपनी चुनौतियों से निकलने के रास्ते तलाशें। आम तौर पर शिक्षक अपने अनुभवों के आधार पर ही अपने सीखने-सिखाने के तरीकों को निखारते रहे हैं, लेकिन कई बार अपने अनुभवों को दर्ज नहीं कर पाते हैं। परिणामस्वरूप उनकी खुशी और परेशानियों के ढेर सारे पल समय के साथ कहीं खो जाते हैं।

अपनी डायरी की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करते हुए रेखा लिखती हैं, अपने शिक्षण के दौरान एक जरूरी बात मेरी समझ में आई कि पीछे मुड़कर अपने अनुभवों को टटोलना सीखने का एक अच्छा माध्यम हो सकता है। कक्षा में या स्कूल में घटित हो रही प्रक्रियाओं को लिखित रूप में दर्ज करने से खुद की शिक्षण-प्रक्रियाओं को जानना-समझना आसान होता है। साथ ही जरूरत पड़ने पर इन अनुभवों को आगे भी पढ़ा-समझा जा सकता है।

डायरी के बारे में वे आगे बताती हैं, विद्यालय में बहुत-सी चीजें समानान्तर चल रही थीं। मैं अपनी कक्षा में पाठ्यक्रम व विषयवार कार्य कर रही थी। पर मैंने अपनी डायरी में उन्हीं पक्षों को लिखा है जिन पर मैं गहराई से काम कर पाई। जिन पर मेरा निरन्तर सोचना-समझना, पढ़ना-लिखना और संवाद करना बना रहा। अपने स्कूल के अनुभवों को लिखने के पीछे मेरा उद्देश्य था कि यह देख पाऊं कि मैं बच्चों के साथ किस तरह काम कर रही हूं। इस दौरान बच्चों की क्या प्रतिक्रियाएं रही हैं। वे शैक्षिक संबोधों को किस हद तक सीख पा रहे हैं? उनके नहीं सीख पाने की वजहें क्या हैं। मैं जानना चाहती थी कि बच्चे सीखते कैसे हैं। इन अनुभवों में एक संतोष, खुशी और उमंग के पल थे, तो दूसरी तरफ हताशा, तनाव और खीझ के अवसर थे।

एक शिक्षक की निर्मिति कोई एकान्तिक प्रक्रिया नहीं है और न ही सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं से जुड़े अनुभव स्वायत्त हैं, इनकी अपनी सापेक्षताएं हैं। रेखा ने अपनी भूमिका में इसका भी उल्लेख किया है, स्कूल में पढ़ाई-लिखाई और डायरी लिखने के साथ-साथ कुछ और चीजें भी चल रही थीं, जिनमें शैक्षिक कार्यशालाओं में प्रतिभाग करना, शिक्षा में काम करने वाले अपने कुछ साथियों से बातचीत करना, शिक्षा पर लिखी पुस्तकें, लेख व पत्रिकाएं आदि पढ़ना शामिल था। इन सबने मिलकर शिक्षा पर एक स्तर की समझ बनाने में मेरी मदद की। जब मैं शिक्षा की किताब पढ़ रही थी, तो पता चला कि अपनी सहज बुद्धि के हिसाब से जो काम अपने स्कूल में कर रही हूं, उनके कुछ शिक्षाशास्त्रीय, समाजशास्त्रीय व मनोवैज्ञानिक आधार भी हैं। यह जानकर स्वयं पर विश्वास बढ़ा। अपने स्कूली अनुभवों को लिखने के क्रम में भी मुझमें अपने शिक्षण कार्य को लेकर एक नई समझ विकसित हुई। अपने काम से लगाव बढ़ा। अपने बच्चों को समझने, उनके साथ काम करने व सीखने-सिखाने को लेकर कुछ मान्यताएं टूटीं, तो कुछ नई बनी भीं।

डायरी के तीन वर्षों के फलक में विस्तारित अन्तर्वस्तु के क्षेत्र को क्रमशः प्राथमिक शाला में रचनात्मक लेखन का आशय; अवलोकन, खोजबीन और अभिव्यक्ति तथा प्राथमिक शाला में शिक्षक होने का अर्थ जैसे वृत्तान्त-खण्डों में विभाजित किया गया है। इनके विस्तार में जाना यहां संभव नहीं है। इस संदर्भ में यही कहना पर्याप्त होगा कि रेखा चमोली ने बच्चों के साथ अन्तर्क्रिया के दौरान अपने को खुला रखा है। इस क्रम में वे सीखने-सिखाने के संज्ञानात्मक क्षेत्र से बच्चों के भावनात्मक क्षेत्र में प्रवेश करती हैं। स्वाभाविक ही है कि इस प्रसंग में वे अक्सर स्कूल की परिधि का अतिक्रमण कर बच्चों के जीवन परिवेश, सामाजिक-आर्थिक यथार्थ और स्कूली तंत्र की व्यवस्था से भी टकराती हैं। यहां स्कूल और बच्चों के परिवेश के मध्य स्वाभाविक रूप से एक द्वंद्व उत्पन्न होता है जिसमें भेदमूलक प्रश्नों से उनकी मुठभेड़ होती है। यदि शिक्षक बच्चों से गहरी संलग्नता रखता है और उनके मानस-जगत को समझना चाहता है तो वह इस द्वंद्वात्मक प्रक्रिया से बच भी नहीं सकता है। हालांकि यहां उसके हस्तक्षेप की निश्चित सीमाएं हैं।

पुस्तक : मेरी स्कूल डायरी
लेखक : रेखा चमोली
संपादन : गुरबचन सिंह
प्रकाशक : अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय का प्रकाशन

रेखा लिखती हैं, एक शिक्षक के तौर पर मैंने अनुभव किया है कि बहुत बार व्यवस्था की कमजोरियों को नजरअंदाज करके एक शिक्षक को अपनी समस्याओं के हल निकालने होते हैं। उसे सीखने-सिखाने को लेकर बन चुकी मान्यताओं को चुनौती देते हुए निरन्तर नये तरीकों की खोज करनी होती है। ऐसे तरीके जो बच्चों की समझ कर पढ़ने की क्षमताओं का विकास करें। वे आगे कहती हैं, मुझे यह भी महसूस होता है कि शिक्षक को अपने पूर्वाग्रहों से भली-भांति अवगत होना चाहिए। यह अहसास कक्षा में बच्चों के साथ बातचीत करने में मदद करता है। साथ ही मैंने कोशिश की है कि बच्चों के सामाजिक संदर्भों को समझूं। उनके चेहरों को पढ़कर उनके मन की बात समझने का प्रयास करूं और इस आधार पर उनसे संवाद करूं कि वे किस प्रकार की परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं। इस दौरान मैं इस बात को भी सोचती रही हूं कि बच्चों के उत्साह और उमंग को कैसे बनाए रखूं।

यहां उल्लेखनीय है कि सिखाने के लिए शिक्षक को स्वयं भी निरंतर अपना सामर्थ्य-वर्धन करना होता है। उसे विषय-क्षेत्र के अलावा ज्ञान के अधुनातन रूपों और विमर्श से एक जीवंत संबंध बनाये रखना होता है। रेखा के लिए संपादकीय में यह टिप्पणी की गई है, लेखिका के व्यक्तित्व व शिक्षण विचार प्रक्रियाओं पर एन.सी.एफ. 2005 और तोतो चान, बच्चे की भाषा और अध्यापक, बच्चे असफल कैसे होते हैं? पढ़ने की समझ, पढ़ने की दहलीज पर, उत्पीड़ितों का शिक्षाशास्त्र और दिवास्वप्न व कथा-कहानी का शास्त्र जैसी शिक्षा की उम्दा किताबों का प्रभाव साफ दिखाई देता है।

इस पुस्तक में सबसे पहले लिखा है कि अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय द्वारा इस डायरी का प्रकाशन क्यों किया गया है? इसमें उचित ही कहा गया है, यह डायरी एक सामान्य सरकारी प्राथमिक विद्यालय व कक्षाओं की अभावग्रस्त परिस्थितियों व वातावरण में अध्यापिकाओं के शिक्षा कर्म का स्वाभाविक विवरण प्रस्तुत करती है जिसका फोकस ग्रामीण परिवेश में रहने वाले गरीब बच्चों की शुरुआती शिक्षा पर है। यह हमें एक शिक्षिका की अपने कर्म में दक्ष बनने की यात्रा पर ले जाती है, और एक गुणवान शिक्षक कैसा होना चाहिए, इसके कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं के उदाहरण हम इस डायरी में पाते हैं। ◆

लेखक परिचय : 'शिक्षा विमर्श' के संस्थापक संपादक, द्वैमासिक 'संस्कृति मीमांसा' के संपादक, स्वयंसेवी संगठन समान्तर 'सेन्टर फॉर कल्चरल एक्शन एण्ड रिसर्च' के कार्यकारी निदेशक (मानद) हैं।

संपर्क : 9828169277; samantarcsc@gmail.com